Innovation and Integrative Research Center Journal
ISSN: 2584-1491 | www.iircj.org
Volume-3 | Issue-1 | January -2025 | Page 107-113

छत्तीसगढ़ी–उपन्यासों में राजनीतिक चेतना

[1]दीपक कुमार, [2]डॉ.ममता रानी
[1]शोधछात्र, [2]सहायक प्राध्यापक
[1,2]हिंदी विभाग,कलिंगा विश्वविद्यालय, रायपुर छत्तीसगढ़

सारांश – छत्तीसगढ़ी साहित्य की जड़ें लोकजीवन में गहराई से पैठी हुई हैं। यहाँ की संस्कृति, परंपराएँ, लोकविश्वास और सामाजिक जीवन साहित्य का प्रमुख आधार रहे हैं। आधुनिक काल में जब छत्तीसगढ़ी भाषा में गद्य साहित्य का विकास हुआ, तब उपन्यास विधा ने समाज के विविध पक्षों को अभिव्यक्ति प्रदान की। उपन्यासकारों ने केवल मनोरंजन के उद्देश्य से नहीं, बल्कि सामाजिक यथार्थ को सामने लाने के लिए इस विधा का उपयोग किया। छत्तीसगढ़ी उपन्यासों में सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक समस्याओं के साथ–साथ राजनीतिक चेतना भी महत्वपूर्ण विषय के रूप में उभरकर सामने आती है। राजनीतिक चेतना का अर्थ केवल सत्ता परिवर्तन या चुनावी राजनीति से नहीं है, बल्कि यह उस व्यापक सामाजिक जागरूकता को दर्शाती है जिसके माध्यम से जनता अपने अधिकारों, कर्तव्यों और राजनीतिक संरचना के प्रति सचेत होती है। छत्तीसगढ़ का इतिहास सामाजिक–आर्थिक विषमताओं, प्राकृतिक संसाधनों के दोहन और क्षेत्रीय उपेक्षा से जुड़ा रहा है। यहाँ के जंगल, खनिज और जल संसाधन अत्यंत समृद्ध हैं, किंतु लंबे समय तक इस क्षेत्र की जनता विकास से वंचित रही। यही कारण है कि यहाँ के साहित्यकारों ने अपने उपन्यासों में सत्ता, प्रशासन और सामाजिक संरचना के प्रति प्रश्न उठाए।

छत्तीसगढ़ी उपन्यासों में राजनीतिक चेतना के स्वर निम्न रूपों में दिखाई देते हैं–

1. ग्रामीण सत्ता संरचना और पंचायत राजनीति का चित्रण
2. जमींदारी और शोषण के विरुद्ध संघर्ष
3. आदिवासी समाज की राजनीतिक जागरूकता
4. राज्य निर्माण आंदोलन और क्षेत्रीय अस्मिता
5. भ्रष्टाचार और प्रशासनिक तंत्र की आलोचना

Innovation and Integrative Research Center Journal
ISSN: 2584-1491 | www.iircj.org
Volume-3 | Issue-1 | January -2025 | Page 107-113

इन सभी विषयों के माध्यम से छत्तीसगढ़ी उपन्यासकारों ने समाज में व्याप्त राजनीतिक समस्याओं को रेखांकित किया है।

कुंजी शब्द – राजनीतिक चेतना, छत्तीसगढ़ी उपन्यास, क्षेत्रीय अस्मिता, आदिवासी समाज, राज्य आंदोलन, अस्मिता, पंचायती राज्य, आदि ।

प्रस्तावना–

छत्तीसगढ़ का इतिहास प्राचीन काल से ही समृद्ध रहा है। यह क्षेत्र प्राकृतिक संसाधनों से भरपूर होने के कारण अनेक शासकों के अधीन रहा। मध्यकाल में यहाँ सामंती व्यवस्था प्रबल थी, जिसमें जमींदार और सामंत वर्ग का वर्चस्व था। ब्रिटिश शासन के दौरान इस क्षेत्र में प्रशासनिक नियंत्रण तो स्थापित हुआ, किंतु स्थानीय जनता की समस्याओं पर विशेष ध्यान नहीं दिया गया। वन कानूनों के कारण आदिवासी समुदाय अपने पारंपरिक अधिकारों से वंचित हो गए। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भी छत्तीसगढ़ क्षेत्र को मध्यप्रदेश का हिस्सा होने के कारण पर्याप्त राजनीतिक महत्व नहीं मिला। यही कारण है कि यहाँ क्षेत्रीय असंतोष और राजनीतिक चेतना का विकास हुआ। इस ऐतिहासिक पृष्ठभूमि का प्रभाव छत्तीसगढ़ी उपन्यासों में स्पष्ट रूप से दिखाई देता है।

छत्तीसगढ़ी भाषा में उपन्यास लेखन अपेक्षाकृत देर से प्रारंभ हुआ। प्रारंभिक उपन्यासों में सामाजिक विषयों का अधिक प्रभाव था, किंतु धीरे–धीरे राजनीतिक विषय भी सामने आने लगे। उपन्यासकारों ने अपने अनुभवों और सामाजिक परिवेश को आधार बनाकर ऐसे कथानक रचे जिनमें आम जनता के जीवन संघर्ष के साथ राजनीतिक परिस्थितियों का भी चित्रण मिलता है।

छत्तीसगढ़ी उपन्यासों में राजनीतिक चेतना निम्न रूपों में व्यक्त होती है–

1. सामाजिक अन्याय के विरुद्ध प्रतिरोध
2. आर्थिक शोषण के खिलाफ संघर्ष
3. प्रशासनिक व्यवस्था की आलोचना
4. क्षेत्रीय पहचान और स्वायत्तता की भावना?

Innovation and Integrative Research Center Journal
ISSN: 2584-1491 | www.iircj.org
Volume-3 | Issue-1 | January -2025 | Page 107-113

इन उपन्यासों में पात्र केवल व्यक्तिगत समस्याओं से नहीं जूझते, बल्कि वे सामूहिक संघर्ष का भी प्रतिनिधित्व करते हैं। छत्तीसगढ़ मुख्यतः ग्रामीण क्षेत्र है। इसलिए यहाँ के उपन्यासों में गाँव की राजनीति का चित्रण अत्यंत महत्वपूर्ण है ग्रामीण राजनीति में पंचायत व्यवस्था, जातीय संबंध और आर्थिक शक्ति का महत्वपूर्ण स्थान होता है। उपन्यासों में यह दिखाया गया है कि किस प्रकार गाँव के प्रभावशाली लोग पंचायत चुनाव में अपना वर्चस्व बनाए रखने के लिए विभिन्न प्रकार के हथकंडे अपनाते हैं। कई उपन्यासों में यह भी दिखाया गया है कि गरीब किसान और मजदूर चुनाव के समय नेताओं के वादों के जाल में फँस जाते हैं। चुनाव के बाद उनकी समस्याएँ वहीं की वहीं रह जाती हैं। उदाहरण के रूप में एक कथानक में यह दर्शाया गया है कि गाँव का एक नेता चुनाव जीतने के लिए किसानों को जमीन के पट्टे दिलाने का वादा करता है, किंतु जीतने के बाद वह अपने निजी हितों में ही व्यस्त हो जाता है। इस प्रकार उपन्यासकारों ने ग्रामीण लोकतंत्र की वास्तविकताओं को उजागर किया है।[1]

छत्तीसगढ़ी उपन्यासों में जमींदारी व्यवस्था का चित्रण भी महत्वपूर्ण है। जमींदार वर्ग लंबे समय तक ग्रामीण समाज पर नियंत्रण बनाए हुए था। कई उपन्यासों में यह दिखाया गया है कि जमींदार किसानों से अत्यधिक लगान वसूलते थे और उनके साथ अमानवीय व्यवहार करते थे। इस स्थिति के खिलाफ धीरे–धीरे किसानों में जागरूकता उत्पन्न हुई और उन्होंने अपने अधिकारों के लिए संघर्ष करना शुरू किया। उपन्यासों में यह संघर्ष राजनीतिक चेतना का प्रतीक है। यह दर्शाता है कि जनता अब शोषण को स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं है।

छत्तीसगढ़ में आदिवासी समुदाय की बड़ी आबादी निवास करती है। इन समुदायों का जीवन जंगल, जमीन और प्राकृतिक संसाधनों से जुड़ा हुआ है। कई उपन्यासों में यह दिखाया गया है कि किस प्रकार वन विभाग, ठेकेदार और व्यापारी आदिवासियों का शोषण करते हैं। आदिवासी पात्र धीरे–धीरे अपने अधिकारों के प्रति जागरूक होते हैं और संगठित होकर संघर्ष करते हैं। यह संघर्ष केवल आर्थिक नहीं बल्कि राजनीतिक भी है, क्योंकि इसमें सरकारी नीतियों और प्रशासनिक व्यवस्था को चुनौती दी जाती है।

Innovation and Integrative Research Center Journal
ISSN: 2584-1491 | www.iircj.org
Volume-3 | Issue-1 | January -2025 | Page 107-113

आवा छत्तीसगढ़ी उपन्यास में स्वतंत्रता आंदोलन की पृष्ठभूमि भी दिखाई देती है। इन उपन्यासों में यह बताया गया है कि किस प्रकार राष्ट्रीय आंदोलन की विचारधारा ग्रामीण और आदिवासी क्षेत्रों तक पहुँची। स्वतंत्रता आंदोलन ने लोगों में राजनीतिक जागरूकता उत्पन्न की। साधारण किसान और मजदूर भी स्वतंत्रता संग्राम में भाग लेने लगे। उपन्यास में यह भी दिखाया गया है कि कैसे अंग्रेजी शासन के खिलाफ जनभावना धीरे–धीरे मजबूत होती गई। "आवा" उपन्यास समाज और देश का चित्रण करता एक आदर्श सामाजिक उपन्यास भी है। यहां उपन्यासकार परदेशीराम वर्मा ने लीमतुलसी नामक गांव का जो सामाजिक चित्रण किया है वह उस गांव की सामाजिक अस्मिता का प्रतीक है । ने केवल इस गांव को बल्कि पूरे छत्तीसगढ़ की सामाजिक अस्मिता को रेखांकित करने का प्रयास उपन्यासकार ने किया है।

आवा उपन्यास में सामाजिक अस्मिता और गांव की पहचान का दृश्य बड़ी बारीकी से उपस्थित है। एक दृश्य देखिए– देवारी बूता के मारे लीमतुलसी भर के का माई लोगन, का लइका सियान, सब बिपट गें। ओती लुवई टोरई के कारज फदक गे । येती छाबना मूंदना। कइसे पंदरही बीत गे पते नई चलिस । गौरा चौरा मा एक हफ्ता पहली फूल कुचरागे ।

एक पतरी रैनी झैनी,

राय रतन ओ दुर्गा देवी....

गीत गौरा चौरा म सुरु होगे ।

बिसालिक के घर म छत्तर के बनाय गौरा के सिंगार सुरू होगे । गौरी बनिस सुकालू के घर म । गौरा चढ़िस नंदी म, गौरी ल बइठारिन केछुवा बना के । भरूहा काड़ी माटी सनपना, धान के बाली, पीड़हा, गोंदा फूल, दीया, पोनी अउ तेल सब के सरंजाम होगे । बिसालिक अउ गोंड़पारा के भाई मन करसा बोहाय बर येसो घलो अपन बहिनी ल लेवा के लानिन । दुख तो रिहिस फेर रिहिस फेर गौरा गौरी के मान राखे बर बहिनी मन ल लेवा के लानिन । लुगरा, पोलखा, चुरी, चाकी, पइसा – रूपिया, सब दीन । ठीक समें म बहिनी मन करसाबोह के निकरिन। गंवखरा बाजा बाजे ल धर लिस–दधनिंग दधनिंग । धान के

Innovation and Integrative Research Center Journal
ISSN: 2584-1491 | www.iircj.org
Volume-3 | Issue-1 | January -2025 | Page 107-113

बाली, महऊर रंग, चांऊर गोबर, हरदी रंग म सिंगारे गौरा–गौरी ल पीढ़ा म बोह के निकरिन । गीत सुरू होगे...

"येकर बाप रिहिस गजब गुन्निक, तेकर बेटा ये समेलाल । वाह बेटा वाह, नाव कमाबे रे । जस बढ़ाबे बाप के । लीमतुलसी गांव एक दिन बनही तिरिथ–धाम ।"[2]

परदेशीराम वर्मा प्रेमचंद की परंपरा का गांव–समाज दिखाना चाहते हैं और एक हद तक वे अपने प्रयोग में सफल भी हैं । ऐसा ही सुंदर प्रयोग अपने संस्मरणात्मक उपन्यास "माटी के मितान" में सरला शर्मा करती हैं और समाज के भीतर की संवेदना को सामने लाकर उसकी अस्मिता को जगाती हैं। एक दृश्य माटी के मितान का देखें–

ननवा दीदी के कुरिया मं आयेन – अंगना कती के खिड़की ल खोलिस त कुरिया अंजोर हो गईस, करिया पथरा दसाये भुइयां ल खूंट धर के अऊं ठियाये रहिन, सुग्घर दीखत रहिस। बाजबट मं दरी दसे रहिस... तैइय दिन के खिड़की वाला पलंग मं सुपेती – तकिया, उज्जर दसना दसे रहिस ओई मं नवा दीदी बैठिस मैं बाजबट मं बइठेंव। एदारी मैं कहेंव – "नवा दीदी ! मोर नांव सुधा हे, मैं भिलाई मं रहिथंव, इहाँ गांव देखे बर आये हंव ।" [3]

माटी के मितान में घर है, घर के भीतर की संवेदना है, रिश्ते हैं और रिश्तों की मधुर पड़ताल है। रिश्तों की यह कड़ी छत्तीसगढ़ी समाज की अस्मिता को निखारती है, उसे संवारती है।

नवा दीदी यहां स्वयं अस्मिता का बोध कराने तत्पर है। इसे इस उपन्यास के कुछ दृ श्यों से समझा और अनुभव किया जा सकता है–` नवा दीदी उठिस त देखेंव सटान देंह, कोनो मेरे तोला भर मांस अकतिहा नइये जाना परसा के उज्जर लकरी में कोनो बढ़ई छ दुलपुतरी बूंदे हे । अइसे लागथे जाना घर में नवा दीदी के हुकुम बिना पाना घलो नई डोलय... । लहुट आइस नवा दीदी, ओकर हाथ में दू ठन पाके बिही रहिस, एक उन ल मोला दिहीस, एक उन ल लेके अपन खाये लागिस ... पातर ओंठ के पाछू में लुकाये–दरमी दाना कस दांत दिखिस ।

Innovation and Integrative Research Center Journal
ISSN: 2584-1491 | www.iircj.org
Volume-3 | Issue-1 | January -2025 | Page 107-113

"नवा दीदी ! माधोपुर ल फेर कब फिरे? अऊ इहां दूनो लइका मन तोला नवा दीदी कावर कहे लागिन ।" मैं पूछेंव । "सुधा ! विधाता हर नोनी लइका मन के मन ल आने मांटी के सिरजे होही, तभे तो सात भांवर के परे ले.. चुपे चुप... अपने मन ह आन के हांथ हो जाये...। घड़ी भर विलम के फेर कहे लागिस नवा दीदी" माधोपुर गयेंव... बूढ़ी दाई रपोट लिस ओकर आंखी रोवय, ओंठ हांसय, मोर मूंड़ ले गोड़ तलक ल देख के कहिस– "कलस के पानी परे पन्द्रही होइस हे अऊ नोनी के देंह भर गे । आठो अंग मं गहना साजे राजरानी कस दिखत हे खा–पहिर के जुड़ा बेटी, मइके ससुरे के मान राख के चलवे – चलावे, मइके के दुलौरिन बेटी रहे अब ससुरार के दुलौरिन बहुरिया बन । " [4]

ऐसा ही एक दृश्य देखिए जो देवार जाति के बहाने रिश्तों की पड़ताल करता है–

छत्तीसगढ़ में ऐसे अनेक रिश्ते हैं जो खून पर आधारित न होकर समाज और संस्कृति पर आधारित है। ऐसा ही एक रिश्ता है गंगाजल का । उपन्यासकार ने अपने इस उपन्यास में ऐसे अनेक रिश्तों की महत्ता सिद्ध की है । छत्तीसगढ़ राज्य की स्थापना वर्ष 2000 में हुई। इससे पहले लंबे समय तक अलग राज्य की मांग चलती रही। छत्तीसगढ़ी साहित्य में इस आंदोलन का प्रभाव स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। कई उपन्यासों में यह प्रश्न उठाया गया है कि जब छत्तीसगढ़ प्राकृतिक संसाधनों से इतना समृद्ध है, तो यहाँ की जनता गरीब क्यों है। यह प्रश्न राजनीतिक चेतना का प्रतीक है। उपन्यासों में यह भी दिखाया गया है कि कैसे स्थानीय लोग अपनी भाषा, संस्कृति और पहचान को बचाने के लिए संघर्ष करते हैं।

छत्तीसगढ़ी उपन्यासों में भ्रष्टाचार की समस्या को भी गंभीरता से उठाया गया है।कई कथानकों में यह दिखाया गया है कि सरकारी योजनाएँ गरीबों तक नहीं पहुँच पातीं क्योंकि बीच में भ्रष्टाचार और दलाली की व्यवस्था सक्रिय रहती है। उपन्यासकारों ने यह भी बताया है कि कैसे सत्ता के निकट रहने वाले लोग सरकारी संसाधनों का दुरुपयोग करते हैं। छत्तीसगढ़ मुख्यतः कृषि प्रधान क्षेत्र है। यहाँ के किसानों की समस्याएँ साहित्य का महत्वपूर्ण विषय रही हैं। उपन्यासों में यह दिखाया गया है कि किसान कर्ज, बाजार व्यवस्था और प्राकृ

Innovation and Integrative Research Center Journal
ISSN: 2584-1491 | www.iircj.org
Volume-3 | Issue-1 | January -2025 | Page 107-113

तिक आपदाओं के कारण परेशान रहते हैं। धीरे–धीरे किसानों में यह चेतना विकसित होती है कि उनकी समस्याएँ केवल आर्थिक नहीं बल्कि राजनीतिक भी हैं।

छत्तीसगढ़ी उपन्यासों में राजनीतिक चेतना केवल विषयवस्तु का हिस्सा नहीं है, बल्कि यह साहित्य की सामाजिक भूमिका को भी दर्शाती है। इन उपन्यासों के माध्यम से पाठकों को समाज की वास्तविक स्थिति का ज्ञान होता है और उनमें सामाजिक परिवर्तन की भावना उत्पन्न होती है। इस प्रकार साहित्य समाज में जागरूकता फैलाने का महत्वपूर्ण माध्यम बन जाता है। छत्तीसगढ़ी उपन्यासों में राजनीतिक चेतना का स्वर अत्यंत सशक्त है। यह चेतना समाज में व्याप्त अन्याय, शोषण और असमानता के खिलाफ आवाज उठाती है। उपन्यासकारों ने ग्रामीण जीवन, आदिवासी समाज और किसान वर्ग के अनुभवों के माध्यम से यह दिखाया है कि किस प्रकार राजनीतिक संरचना आम जनता के जीवन को प्रभावित करती है। इन उपन्यासों में केवल समस्याओं का चित्रण नहीं है, बल्कि परिवर्तन की आकांक्षा भी दिखाई देती है। इस प्रकार छत्तीसगढ़ी उपन्यास सामाजिक और राजनीतिक यथार्थ के महत्वपूर्ण दस्तावेज के रूप में सामने आते हैं।

संदर्भ ग्रंथ –

1. कौशल मुकुंद, केवरस, वैभव प्रकाशन, रायपुर
2. वही
3. *जयप्रकाश मानस,* कका के घर से लौटने के बाद, समीक्षा हरिभूमि, रायपुर दिनांक 2 मार्च, 2020
4- शर्मा कृष्णकुमार, छेरछेरा, पृ. 1.